दशा विश्लेषण सूत्र

- ग्रह जिस भाव में बैठा है उस भाव का फल अपनी दशा में देगा
- वह ग्रह जिसका हम विचार कर रहे है उसके नवमांश में और उसके नक्षत्र में जो ग्रह होगा उसका भी फल विचारणीय ग्रह देगा,
- विचारणीय ग्रह किस नवमांश और नक्षत्र में है उसका भी फल देगा,
- विचारणीय ग्रह जिन भावो का स्वामी होगा उसका भी फल देगा,
- विचारणीय ग्रह जिस राशी में है उसके स्वामी का भी बलाबल देखना चाहिए,
- विचारनिए ग्रह के नवमांश और नक्षत्र में जो ग्रह है उसके अनुसार भी फल प्रभावित होगा
- विचारणीय ग्रह पर किन ग्रहों की दृष्टि है उसका भी प्रभाव पड़ेगा
- महा दशेश और अंतर्दशेष का परस्पर संबध दशाफल को निर्धारित करता है,
- उच्च.स्वराशी,मूलत्रिकोण,मित्र गृही,शुभ नवमांश,वर्गोत्तम,शुभ कर्तरी,उग्र या क्रूर नक्षत्र में न स्थित ग्रह शुभ फल देता है,इसके नीच,शत्रु राशी क्रूर नवमांश,नीच नवमांश,पाप कर्तरी,उग्र या क्रूर नक्षत्र में स्थित ग्रह अशुभ फल देता है,
- महादशा नाथ और अंतर दशा नाथ का परस्पर 6,8,12, होना अशुभ फल देगा

- ग्रह के बल के अनुसार दशा का फल प्राप्त होता है। अशुभ ग्रह यदि शत्रु स्थान व राशि में हो तो विशेष अशुभता देगा। इसी प्रकार शुभ ग्रह बलवान हो तो विशेष शुभ फल देगा।
- त्रिक स्थानों अर्थात छठे, आठवें व बारहवें भाव के स्वामी अपनी दशा में अशुभ फल प्रदान करते हैं।
- त्रिक स्थानों में बैठे ग्रह अपनी महादश में छठे, आठवें व बारहवें भाव के स्वामियों की अन्तर्दशा आने पर व त्रिक स्थान के स्वामी की महादशा में स्वयं की अन्तर्दशा में अशुभ फल प्राप्त करते हैं।
- त्रिक स्थानों में स्थित ग्रह परस्पर एक-दूसरे की दशा अन्तर्दशा में भी अशुभ फल देते हैं।
- किसी राशि के प्रारंभिक एवं अंतिम अंशों में स्थित अर्थात बाल या मृत्यु अवस्था में ग्रह की दशा एवं अन्तर्दशा अनिष्टकारक होती है।
- किसी ग्रह की महादशा में उसके शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा आने पर वह अशुभ फल प्रदान करता है।
- शत्रु क्षेत्र अर्थात शत्रु राशिगत ग्रह की दशा में जातक के कार्यो में विघ्न-बाधाएं आती हैं।
- अस्त ग्रह की दशा में अनेक अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
- वक्री ग्रह की दशा में भी अशुभ फल प्राप्त होते हैं। परदेशवास, रोग, पीड़ा, धनहानि तथा मानहानी जैसे प्रभाव मिलते हैं।
- जन्म पत्रिका में राहु या केतु से युक्त पापी ग्रह हो तो उनकी दशा कष्टदायक व्यतीत होती है।

- शुभ ग्रह की महादशा में क्रूर व पाप ग्रहों की अन्तर्दशा आने पर प्रथम दुःख और बाद में सुख मिलता है। पापी ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा आने पर पहले दुख और बाद में सुख मिलता है।
- जिस ग्रह की महादशा व अंतर्दशा हो न उन ग्रहों की जन्म पत्रिका में स्थिति के अनुसार प्रभाव होता है। उन ग्रहों, भावों के आधार पर महादशा का फल निर्णय होता है।
- भावेश, भाव से 6,8,12 में बैठा हो तो उसकी दशा में उस भाव संबंधित फल का नास होता है। जैसे पंचम भाव का स्वामी बुध यदि दशम भाव में स्थित हो तो बुध की दशा में पंचम भाव संबंधी फल नष्ट हो जायेंगे।
- छठे,आठवे,बारहवे भाव के स्वामियों की या 6,8,12, भाव में बैठे ग्रहों की परसपर महादशा व अन्तर्दशा होने पर अशुभ फल ही प्राप्त होते हैं।
- जिस ग्रह की महादशा हो उसी ग्रह की अंतर्दशा होने पर सामान्य फल प्राप्त होते है।
- परम उच्च ग्रह की दशा में श्रेष्ठ फल, उच्च ग्रह की दशा में विशेष शुभ फल, स्वराशि व मूलत्रिकोण राशि में स्थित ग्रह की दशा में प्रगति व शुभ फल मित्र राशि की दशा में शुभ फल एवं सम राशि में ग्रह की दशा में सामान्य फल प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार परम नीच राशि में विशेष अशुभ, नीच राशि में अशुभ एवं शत्रु राशि में कष्टदायक फल प्राप्त होते है।

- शुभ ग्रहों के साथ या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट ग्रह की दशा में शुभ फल एवं पाप ग्रह के साथ या पाप ग्रहों से दृष्ट ग्रह की दशा अशुभ फल देती है।
- लग्न, दशम भाव एवं एकादश भाव में स्थित ग्रहों की दशा शुभकारक होती है।
- पत्रिका में दो ग्रह शुभ एवं लाभदायक फल प्रदान करते हो तो उनकी परस्पर महादशा व अंतरदशाओं में उन्नति, लाभ व अन्य शुभ फलों की प्राप्ति होती है।
- केन्द्र (लग्न, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव व दशम भाव) में स्थित ग्रहों का दशा में विदेश प्रस्थान व भाग्य में उन्नति प्राप्त होती है।
- केन्द्रेश और त्रिकोनेश की दशा अन्तर्दशा परस्पर शुभ फल देती है
- छठे, आठवे व बारहवें भाव में स्थित ग्रह व इन भावों के स्वामियों की दशा जीवन में अशुभ फल प्रदान करती है।
- पाप ग्रहों की दशा में पाप ग्रह की जो कुंडली के करक ग्रह न हो, उसमे पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो हानि, रोग व अन्य पीड़ा होती है। इसी प्रकार में शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की ही अंतर्दशा हो ते धन लाभ, वृद्धि, सुख व सम्मान की प्राप्ति हेती है।
- लग्नेश अर्थात लग्न के स्वामी की दशा विशेष शुभ फलदायी होती है। जातक को उन्नति, लाभ, प्रगति, प्रसिद्धि एवं स्वास्थ्य लाभ लग्नेश की दशा मे होता है।

- द्वितीयेश अर्थात द्वितीय भाव के स्वामी की दशा अशुभ ग्रह की होने पर अशुभ एवं शुभ ग्रह की होने पर शुभ होती है। द्वितीयेश मारकेश भी है इसलिए द्वितीयेश की दशा में कष्ट व अशुभ स्थिति में मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त होता है।
- तृतीयेश की दशा में लगातार उतार-चढाव आते हैं। शुभ ग्रहों की युति या दृष्ट होने से सुभ अन्यथा अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
- चतुर्थेश की दशा सुखकारक मानी गयी है यदि वह शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रहों द्वारा युत या दृष्ट हो। इस दशा में घर, वाहन, सुख व समृद्धि प्राप्त होते हैं।
- पंचमेश की दशा जीवन में समस्त प्रकार की प्रगति व लाभ को दर्शाती है। पंचमेश की महादशा में पाप ग्रहों की अंतर्दशा से जातक के पुत्रों पर विपत्ति व घर में कलह होती है।
- षष्ठेश की दशा रोग, कर्ज व शत्रुओं की वृद्धि करती है। जातक इस दशा में विशेष दुखी व परेशान रहता है। षष्ठेश पापा ग्रह हो, पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो तो यह विशेष अशुभ फलदायक है।
- सप्तमेश की दशा में जातक को मानसिक चिंताओं के अलवा शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होता है। जातक की पत्नी भी कष्ट भोगती है। ऐसी दशा प्रायः जातक को अपने घर व शहर से दूर ले जाती है।
- अष्टमेश की दशा भी हानिकारक होते हुए मृत्यु तुल्य कष्ट प्रदान करती है।
- नवमेश की दशा भाग्योन्नति करती है। जातक को आर्थिक लाभ होता है एवं उसकी रूचि आध्यात्मक व धर्म के प्रति बढ़ती है।

इस में प्रायः जातक तीर्थ यात्रा व दान पुण्य के कार्यों में संलग्न रहता है।

- दशमेश की दशा जातक को उन्न्ति, धन पद व प्रतिष्ठा प्रदान करती है। दशमेश यदि नीच का शत्रु राशि का हो या उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा आ जायें तो जातक को संकट झेलने पड़ते हैं।
- एकादश भाव के स्वामी की दशा में जातक को लाभ व आय में वृद्धि होती है।
- द्वादश भाव के स्वामी की दशा में जातक को चिंताए, कष्ट व धन का नाश होता है।
- कोई ग्रह अशुभ भाव का स्वामी होकर अस्त,नीच,शत्रु राशी में हो विशेष पीड़ा देता है
- धनेश या धन भाव बैठा अच्छा ग्रह और लाभेश या लाभ भाव में बैठा अच्चा ग्रह धन दिलाता है
- द्वितीयेश,सप्तमेश,अष्टमेश द्वादशेश की परस्पर महादशा व् अन्तर्दशा हो तो जीवन हानी हो सकती है
- अष्टम भाव में स्थित ग्रह अपने से सम्बंधित रोग चिंता अपनी दशा में देता है फिर वह चाहे जो भी ग्रह हो,

प्रत्येक महादशा को अंतरा-दशा या भुक्ति नामक ग्रह काल में भी विभाजित किया जाता है, और प्रत्येक अंतरा-दशा को आगे चलकर प्रतिहार-द्वादश में विभाजित किया जाता है, जो महादशाओं के समान और समान आनुपातिक लंबाई के साथ अपना क्रम चलाते हैं। उदाहरण के लिए, केतु की पहली भुक्ति केतु / केतु है, दूसरी केतु / शुक्र है, तीसरी केतु / सूर्य और इसी

तरह। ये उपविभाग प्रत्येक महादशा के प्रभाव की अधिक विस्तृत परीक्षा की अनुमति देते हैं, और घटनाओं के घटित होने और कब होने की बहुत अधिक स्पष्ट संकेत देते हैं।

प्रत्येक महादशा की अंतिम भुक्ति को प्रमुख पारी के लिए एक प्रारंभिक समय माना जाता है जिसे अगली महादशा लाएगी। इस प्रकार, सूर्य महादशा की अंतिम भुक्ति सूर्य / शुक्र है, जो रिश्तों और पारिवारिक मामलों पर जोर देकर आने वाली चंद्रमा महादशा की तैयारी करती है। इसी प्रकार, बृहस्पति की अंतिम भुक्ति बृहस्पति / राहु है जो तनाव और सांसारिक चिंताओं को पुन: प्रशिक्षित करके व्यावहारिक और यथार्थवादी शनि महादशा के लिए मन को तैयार करती है। अंतरा-दशा के प्रभाव दशा स्वामी की ताकत के आधार पर प्रत्येक महादशा के लिए अलग-अलग होंगे। इसका कारण महादशा को कार माना जाता है और अंतरा-दशा को चालक माना जाता है। यदि चालक (भक्ति स्वामी) बुद्धिमान है, तो वह बहुत अच्छी तरह से ड्राइव कर सकता है, भले ही कार (दशा स्वामी) बहुत शक्तिशाली नहीं है, लेकिन कार में कुछ सीमा होगी।

अन्तर्दशा अलग-अलग राशियों के अनुसार अलग-अलग परिणाम देती है।

जबकि हिंदू ज्योतिष पर सभी क्लासिक ग्रंथ सामान्य रूप से ग्रहों के दशा-प्रभाव, स्वास्थ्य, धन, खुशी, गतिविधि, आयु और

मानव की सामान्य भलाई के आधार पर बताते हैं कि सभी घटनाओं में फिर से होने की प्रवृत्ति होती है, नौ ग्रहों के विमशोत्री महादशाओं के समग्र प्रभाव उनके संबंधित द्वादश और पश्यन्त्र-दशाओं के प्रभाव के अधीन होते हैं, जो कि उनके स्थान पर काफी हद तक महादशा-स्वामी से गिना जाता है और इसके साथ उनका प्राकृतिक और लौकिक संबंध है। सर्वार्थ चिंतामणि के लेखक ने टिप्पणी की है कि प्राचीन द्रष्टाओं ने किसी के जीवन काल आदि के आकलन के लिए किसी अन्य विधि को मंजूरी नहीं दी थी; जन्म के समय प्राप्त योगों की सहायता और दासों की प्रकृति के संचालन के अलावा अन्य। बारह राशियों, उनके विभाजन और उप-विभाजन, सत्ताईस नक्षत्र और उनके विभाजन, और नौ ग्रहों के साथ-साथ उनके सरल संयोजन, संघ और क्रमपरिवर्तन हजारों योग और अवा-योग बनाते हैं। ग्रह जिन भागों में वृद्धि के साथ संकेत दे रहा है, वे महादशा के उत्तरार्द्ध में अपना पूर्ण प्रभाव दिखा सकते हैं; पहले भाग के साथ, शुरुआती अवधि में, और मीन में, मध्य में उभरे हुए संकेतों में। व्याख्या की कला परिस्थिति से परिस्थिति और ज्योतिषी की व्यक्तिपरक प्रशंसा से भिन्न होती है।

केतु - 7 वर्ष।

केतु व्यक्ति से दर्शन ग्रंथों के भोग और पूजा में संलग्न किया जाता है, चिकित्सा के अभ्यास से बहुत अधिक आय प्राप्त होती है, घरेलू सुख-सुविधाओं और विलासिता, सौभाग्य और रोग से

मुक्ति मिलती है। लेकिन अगर केतु कमजोर है तो शरीर की तीव्र पीड़ा और मन की पीड़ा, दुर्घटनाएं, घाव और बुखार हो सकता है, कम कंपनी है और उनके माध्यम से बुरे परिणाम भुगतना पड़ सकता है।

शुक्र- 20 वर्ष।

यदि शुक्र मजबूत है और अनुकूल है, तो व्यक्ति कला और आनंद की चीजों को प्राप्त कर सकता है, दूसरों के साथ मिलकर सौहार्दपूर्ण तरीके से और लाभ प्राप्त करता है, प्यार में पड़ जाता है, शादी कर लेता है, जीवनसाथी के लिए प्यार और स्नेह बढ़ता है, बेटियों को भूल जाता है, के कारण वृद्धि होती है किसी महिला और शुभचिंतकों का संरक्षण या पक्ष। लेकिन अगर शुक्र कमजोर है और पीड़ित है, तो वह अस्वस्थता से पीड़ित है, मूत्र या वंक्षण संबंधी रोगों, कम यौन कौशल, मौद्रिक नुकसान, एहसान और समर्थन की कमी, घर और बाहर की शर्मिंदगी का सामना करता है और एक बुरा नाम कमाता है।

सूर्य - 6 साल।

यदि सूर्य मजबूत और अनुकूल है तो आत्मा मजबूत महसूस करेगी, व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार के लिए प्रयास कर सकता है, शानदार ढंग से जी सकता है, दूर-दूर तक यात्रा कर सकता है, संघर्ष या शत्रुता में संलग्न हो सकता है जो अच्छे लाभांश, स्थिति और स्थिति में वृद्धि, व्यापार के माध्यम से लाभ प्राप्त

करता है। ,और पिता या पिता से लाभ होगा। यदि सूर्य कमजोर है और पीड़ित व्यक्ति आंतरिक कमजोरी महसूस कर सकता है, शारीरिक और मानसिक प्रगति में गिरावट, स्वास्थ्य परेशानियों, पद और स्थिति में गिरावट, सरकार की नाराजगी, व्यापारिक नुकसान और पिता के हाथों पीड़ित हो सकता है या उसके पिता बीमार हो सकते हैं ।

चंद्रमा - 10 साल।

यदि चंद्रमा मजबूत है और अनुकूल है, तो व्यक्ति हंसमुख दिल, एक खुश और तेज दिमाग हो सकता है, चेहरे की चमक बढ़ जाती है, सूक्ष्म सुख और आराम का आनंद लेता है, एक अच्छी नौकरी प्राप्त करता है या स्थिति में वृद्धि, धन और इष्ट प्राप्त करता है और देवताओं को श्रद्धांजलि देता है। । यदि चंद्रमा कमजोर है और पीड़ित व्यक्ति अस्वस्थता, सुस्ती और अकर्मण्यता, नौकरी या पदावनति में कमी, महिलाओं और माँ के साथ झगड़ा या हानि से पीड़ित है या बीमार पड़ सकता है या मर सकता है।

मंगल - 7 वर्ष।

यदि मंगल मजबूत और अनुकूल है,व्यक्ति भाइयों के माध्यम से लाभ प्राप्त करा सकता है, अधिकार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों से पक्ष में कमा सकता है, सैन्य या अर्ध-पुलिस या पुलिस सेवा में प्रवेश कर सकता है, जमीन जायदाद और अन्य

कीमती सामान प्राप्त कर सकता है, अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है, आशावाद प्रदर्शित करता है साहस और दृढ़ता। यदि मंगल कमजोर है और पीड़ित व्यक्ति किसी मजिस्ट्रेट के हाथों पतन, घाव, खून की कमी से पीड़ित हो सकता है, झगड़ालू हो जाता है, गर्म शब्दों का आदान-प्रदान करता है, दुश्मनी, नफरत और मुकदमे कमाता है।

राहु - 18 वर्ष।

यदि राहु अनुकूल है, तो सत्तारूढ़ शक्तियां हासिल कर सकते हैं या झूठ, चाल और चालाकी का सहारा लेकर सरकारी एहसान बढ़ा सकते हैं, बेईमान साधनों के माध्यम से धन कमा सकते हैं, निवास स्थान बदल सकते हैं। लेकिन यदि राहु प्रतिकूल हो तो बहुत नुकसान उठाना पड़ता है, सर्प-दंश, मन की दुर्बलता, मतिभ्रम और भ्रम, दमा, एक्जिमा आदि से पीड़ित होता है। यह शिक्षा या करियर के लिए सबसे खराब महादशा है जो टूट या बाधित हो सकती है।

बृहस्पति - 16 वर्ष।

यदि बृहस्पति मजबूत है और अच्छे योगों को सीखने और ज्ञान में वृद्धि करने के लिए इच्छुक है; यदि यह मध्यम आयु में आता है तो यह धन को प्राप्त करता है और बेटों को शुभकामना देता है, एक आरामदायक जीवन व्यतीत करता है, एक तीर्थ यात्रा पर जाता है और शुभ उत्सव मनाता है, और

बुढ़ापे में, बेहतर आय और वित्त प्राप्त करता है। यदि बृहस्पति कमजोर है और पीड़ित व्यक्ति शिक्षा छोड़ देता है, असफलता से ग्रस्त है, गरीबी और स्थिति और अस्वस्थता सहित कई दुखों से ग्रस्त है, बुरे काम करता है, निराश हो जाता है, तो बेटे या पोते भी पीड़ित हो सकते हैं।

शनि - 19 वर्ष।

यदि शनि अपने अनुकूल प्रयासों और परिश्रम से सेवा में आगे बढ़ता है, तो शनि द्वारा बताई गई चीजों से लाभ प्राप्त होता है और विरासत प्राप्त होती है। लेकिन यदि शनि प्रतिकूल है तो कुपोषण, गरीबी, मुकदमे आदि के कारण बीमारियों से पीड़ित हो सकता है; बड़ों के साथ झगड़े और विवाद, परिवार में या आसपास के लोगों में मौतें, चारों ओर संकट के कारण प्रगति और दुखी जीवन की राह में बाधाएं और बाधाएं।

बुध - 17 साल।

यदि बुध मजबूत और अनुकूल है तो पढ़ाई, लेखन आदि के लिए समय और ऊर्जा समर्पित करता है; सक्रिय रहता है, वाणिज्य या राजनीति या कूटनीति में संलग्न है, दूसरों के साथ व्यवहार और व्यापार के माध्यम से लाभ प्राप्त करता है, मित्रों, शांति और शांति की कंपनी का आनंद लेता है और आरामदायक वातावरण में रहता है। लेकिन यदि बुध कमजोर है और पीड़ित व्यक्ति नर्वस रोग, खराब लिवर, बुरे दोस्तों और संबंधों के कारण खुद की

बेईमानी और दूसरों की बदनामी और नुकसान की वजह से पीड़ित हो सकता है।

अंतरा-दशा या भुक्ति

प्रत्येक महादशा को अंतरा-दशा या भुक्ति नामक ग्रह काल में भी विभाजित किया जाता है, और प्रत्येक अंतरा-दशा को आगे चलकर प्रतिहार-दशाओं में विभाजित किया जाता है, जो महादशाओं के समान और समान आनुपातिक लंबाई के साथ अपने क्रम में चलती

प्रत्येक महादशा की अंतिम भुक्ति को प्रमुख पारी के लिए एक प्रारंभिक समय माना जाता है जिसे अगली महादशा लाएगी। इस प्रकार, सूर्य महादशा की अंतिम भुक्ति सूर्य / शुक्र है, जो रिश्तों और पारिवारिक मामलों पर जोर देकर आने वाली चंद्रमा महादशा की तैयारी करती है। इसी प्रकार, बृहस्पति की अंतिम भुक्ति बृहस्पति / राहु है जो तनाव और सांसारिक चिंताओं को पुन: प्रशिक्षित करके व्यावहारिक और यथार्थवादी शनि महादशा के लिए मन को तैयार करती है। अंतरा-दशा के प्रभाव दशा स्वामी की ताकत के आधार पर प्रत्येक महादशा के लिए अलग-अलग होंगे। इसको ऐसे समझें की महादशा कार है और अन्तर्दशा चालक, यदि चालक बुद्धिमान है, तो वह बहुत अच्छी तरह से ड्राइव कर सकता है, भले ही कार बहुत शक्तिशाली नहीं है, लेकिन कार बहुत अच्छी हो और चालक नौसिखिया हो तो

अनिष्ट की सम्भावना अधिक है,वही अगर कार और चालक दोनों अच्छे हो तो यह सबसे अच्छी स्थिति होगी,

जन्म नक्षत्र और दशा

अश्वनी मघा मूल नक्षत्र में जन्म से दशा स्वामी केतु होगा, दशा अवधि वर्ष 7 होगी

भरणी पूर्वफाल्गुनी पूर्वषाढा में जन्म से दशा स्वामी शुक्र होगा, दशा अवधि वर्ष 20 होगी

कृतिका उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढा में जन्महोने से दशा स्वामी सूर्य होगा, दशा अवधि वर्ष 6 होगी

रोहिणी हस्त श्रवण में जन्म होने से दशा स्वामी चन्द्र होगा, दशा अवधि वर्ष 10 होगी,

मृगशिरा चित्रा धनिष्ठा में जन्म होने से दशा स्वामी मंगल होगा, दशा अवधि वर्ष 7 होगी,

आर्दा स्वाति शतभिषा में जन्म होने से दशा स्वामी राहू होगा, दशा अवधि वर्ष 18 होगी,

पुनर्वसु विशाखा पूर्वभाद्रपद में जन्म होने से दशा स्वामी गुरु होगा, दशा अवधि वर्ष 16 होगी,

पुष्य अनुराधा उत्तराभाद्रपद में जन्म होने से दशा स्वामी शनि होगा, दशा अवधि वर्ष 19 होगी,

अश्लेषा ज्येष्ठा रेवती में जन्म होने से दशा स्वामी बुध होगा, दशा अवधि वर्ष 17 होगी,

कुल महादशा वर्ष = 120 वर्ष

विशोतरी दशा कैसे निकाले-

1 - सर्व प्रथम जन्म के समय चन्द्रमा किस नक्षत्र मे है ज्ञात करना चाहिए।

2- जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में गतिमान होगा उस नक्षत्र के स्वामी की महादशा होगी।

3 -यह ज्ञात करना है चन्द्र का भोगांश कितना है (भुक्त काल कितना है)

4 -भोग्य काल भोग किये जाने वाला समय कितना बाकी है।

5 -एक नक्षत्र का मान 13°20' अर्थात 800मिनट होता है।

6 -प्रत्येक ग्रह की महादशा का वर्ष नक्षत्र उपयोक्त के अनुसार प्रयोग करेंगे ।

7 - विशोतरी दशा 120 वर्ष की होती है जिसमें सभी नौ ग्रहों की दशा गतिमान होती है ।

महादशा शेष = चन्द्र का भोगे जाने वाला समय ×जन्म नक्षत्र स्वामी वर्ष ÷नक्षत्र मान या 800 मिनट

अन्तर दशा = महादशा स्वामी वर्ष ×अन्तर दशा स्वामी वर्ष ×12÷120

प्रति अन्तर दशा = महादशा वर्ष ×अन्तर दशा वर्ष ×प्रति अन्तर दशा वर्ष ×12×30÷120

विशेष- वर्ष से महीने के लिए ×12 महीने से दिन के लिए ×30

दिन से घंटे के लिए ×24 घंटे से मिनट के लिए ×60 करते हैं।

विशोतरी दशा चक्र में पंच स्तरीय दशा चक्र गतिशील होता है महादशा जन्म चन्द्र नक्षत्र के स्वामी के अनुसार वर्ष की होती है मे सभी ग्रहों की अन्तर दशा गतिमान होती हैं

अन्तर दशा में सभी ग्रहों का चक्र गतिशील होता है जिसे प्रति अन्तर दशा के रूप मे जाना जाता है इसी क्रम मे सूक्ष्म दशा, प्राण दशा गतिमान होती है ।

महादशा दीघ्र अवधि की होने कारण जातक के जीवन को अधिक प्रभावित करती है उससे अन्तर दशा कम समय की होती

है प्रति अन्तर दशा और कम समय की होती है सूक्ष्म दशा, प्राण दशा अल्प अवधि की होती हैं।

जन्म कुंडली में ग्रह जिस प्रकार की परिस्थितियों में होगा उसी के अनुसार फल प्रदान करेंगा वह शुभ या अशुभ किसी रूप में हो सकता है।

उदाहरण के लिए-अति साधारण शब्दों में समझें तो जातक के लिए राष्ट्र प्रमुख पद महादशा नाथ का रहेगा, राज्य प्रमुख का पद अन्तर दशा नाथ को समझे , प्रति अन्तर दशा नाथ जिले का प्रभारी, सूक्ष्म दशा नाथ ग्राम का मुखिया, प्राण दशा नाथ को वार्ड का मैम्बर समझ सकते हैं के अनुसार अन्तर समझ सकते हैं।

जन्म कुण्डली में महादशा के फल अथवा अन्तर्दशा के फल ग्रहों की कुंडली में स्थिति पर निर्भर करते हैं और महादशा में अन्तर्दशा के फल दोनो ग्रहों की एक-दूसरे से परस्पर स्थिति पर निर्भर करते हैं. आइए इसे कुछ बिंदुओ की सहायता से समझने का प्रयास करते हैं.

- महादशानाथ यदि राहु/केतु अक्ष पर स्थित है तब यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है.

- जब द्वादशेश की युति द्वितीयेश के साथ होती है या दृष्टि होती है तब वह अपनी दशा/अन्तर्दशा में वह एक बली मारक बन सकता है.
- जन्म कुंडली में केन्द्र के शुभ स्वामी ग्रह अपने मित्र की दशा/अन्तर्दशा में शुभ फल प्रदान करते हैं.
- सर्वाष्टकवर्ग में जिस ग्रह से 11वें भाव में अधिकतम बिंदु होते हैं या जो ग्रह स्वयं अधिक बिंदुओ के साथ कुंडली में स्थित होता है उस ग्रह की दशा/अन्तर्दशा शुभ फल प्रदान करती है.
- यदि जन्म कुंडली में शुक्र तथा शनि दोनो ही बली अवस्था में स्थित हो तब यह दोनो अपनी दशा/अन्तर्दशा में व्यक्ति को असफलताएँ प्रदान कराते हैं. लेकिन यदि यह दोनो ग्रह एक-दूसरे से छठे, आठवें या बारहवें भाव में हों या एक-दूसरे से त्रिक भावों में स्थित हो तब यह यह एक-दूसरे की दशा में शुभ फल प्रदान करते हैं.
- यदि जन्म कुंडली का उच्च का ग्रह नवांश में नीच का हो जाता है तब वह शुभ व अच्छे फल देने में असफल रहता है. यदि जन्म कुंडली का नीच का ग्रह नवांश में उच्च का हो जाता है तब वह अपनी दशा/अन्तर्दशा में शुभ फल प्रदान करता है.
- राहु यदि त्रिक भाव में स्थित होकर केन्द्रेश अथवा त्रिकोणेश से युति करता है तब अपनी आरंभ की दशा में शुभ फल देता है लेकिन बाद की दशा में व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए अशुभ हो जाती है.
- यदि जन्म कुंडली में शुक्र व बृहस्पति दोनो ही वृश्चिक राशि में स्थित हों या दोनो में से एक ग्रह वृश्चिक राशि में हो लेकिन

एक-दूसरे की दृष्टि में हों तब शुक्र की दशा में शुभ परिणाम मिलते हैं.

- यदि जन्म कुंडली में सूर्य तथा बुध की युति होती है तब बुध की दशा शुभता प्रदान करती है.
- जन्म कुंडली में चंद्रमा तथा मंगल की युति होने पर या परस्पर दृष्टि संबंध बनने पर चंद्रमा की दशा अत्यधिक शुभ हो जाती है लेकिन मंगल की दशा सामान्य सी ही रहती है.
- जन्म कुंडली में यदि शनि तथा बृहस्पति की युति अथवा दृष्टि संबंध बन रहा हो तब शनि की दशा तो शुभ हो जाएगी लेकिन बृहस्पति की दशा सामान्य लाभ देने वाली होगी.
- इसी प्रकार यदि चंद्रमा व बृहस्पति युति कर रहे हो या दृष्टि संबंध बना रहे हों तब चंद्रमा की दशा शुभ हो जाएगी लेकिन बृहस्पति की दशा साधारण रह सकती है.
- किसी भी भाव विशेष से आठवें भाव का स्वामी अपनी दशा में भाव का नाश करता है.
- किसी भी भाव विशेष से 22वें द्रेष्काण का स्वामी ग्रह अपनी दशा में उस भाव के संबंध में अशुभ फल प्रदान करता है.
- किसी भी भाव से छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में बैठे ग्रह यदि निर्बल अवस्था में हों तब अपनी दशा में अशुभ फल प्रदान करते हैं.
- यदि महादशानाथ से अन्तर्दशानाथ दूसरे, चौथे, पांचवें, नवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में हो तब शुभ फल मिलते हैं.

- अन्तर्दशानाथ और महादशानाथ एक-दूसरे से समसप्तक हो तो इसे सामान्य स्थिति माना जाता है और यह हल्के परिणाम देती है.
- यदि अन्तर्दशानाथ, महादशानाथ से तीसरे, छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित होता है तब अशुभ फल मिलते हैं.
- यदि महादशानाथ और अन्तर्दशानाथ नैसर्गिक मित्र होते हैं तथा शुभ भावों के स्वामी होते हैं तब अपनी दशा में अच्छे परिणाम देते हैं.
- जन्म कुंडली में महादशानाथ की उच्च राशि में यदि अन्तर्दशानाथ स्थित होता है तब यह अपनी दशा में अनुकूल फल प्रदान करता है
- महादशानाथ से चौथे, पांचवें, नवम व दशम भाव के स्वामियों की दशा व्यक्ति को अनुकूल फल प्रदान करती है.

  महादशानाथ और उसके नक्षत्रेश(महादशानाथ जिस नक्षत्र में स्थित है) की दशा/अन्तर्दशा में जीवन की मई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटती हैं.
- जन्म कुंडली में जिस ग्रह की महादशा चल रही है उसकी गोचर में स्थिति फलों का निर्धारण करती है अथवा महादशानाथ से गोचर के अन्य ग्रहों की स्थिति दशा के प्रभावों में परिवर्तन लाती है.
- दशानाथ यदि त्रिक भाव का स्वामी ना होकर शुभ भाव का स्वामी होता है और गोचर में जब वह अपनी उच्च, स्वराशि, मूलत्रिकोण राशि में आता है या जिस भाव में दशानाथ स्थित है

उस भाव से तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें भाव में आता है तब शुभ फलों की प्राप्ति होती है.